राष्ट्रदूत स्थापना दिवस

75 वाँ

राष्ट्रदूत जालोर
01-08-2025

1975 EMERGENCY 1975 EMERGENCY 1975 EMERGENCY 1975 EMERGENCY 1975 EMERGENCY 1975 EMERGENCY

मैं दिल हूँ इक अरमान भरा, तू आके मुझे पहचान ज़रा...

इंदिरा गांधी

बहरहाल, सब कुछ दिल्ली में ही नहीं हुआ, काफी कुछ जयपुर में भी हुआ था। उस दिन, जो मैंने, राष्ट्रदूत में एक नौसिखिया, चौबीस वर्षीय प्रशिक्षु पत्रकार के रुप में, देखा व महसूस किया, आप लोगों से शेयर करना चाहता हूं, इससे पहले कि याददाश्त और धुंधली पड़ जाये और राष्ट्रदूत का वह अनुभव अनकहा, अनसुना रह जाये, तथा मन पर एक बोझ बना रहे कि समय रहते कुछ क्यों नहीं किया। अखबार, महाभारत के संजय की भांति, महाराज धृष्टराष्ट्र को केवल युद्ध का विवरण सुनाते थे, अपनी भावनाओं व भय को, अपने तक ही सीमित रखते थे। इसी तरह निष्पक्ष और तटस्थ रहना ही रिपोर्टर को सिखाया जाता था, पहले दिन से ही।

जगजीवन राम

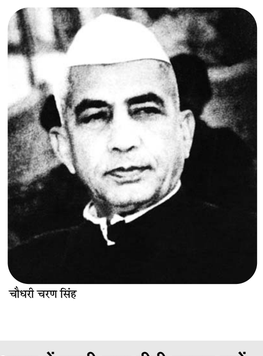

चौधरी चरण सिंह

जॉर्ज फर्नांडिस

इस घटनाक्रम का पूरा मंथन हुआ और गुप्ताजी को पहले पेज के लिए ''न्यूज़'' बनाने का जिम्मा सौंपा गया। न्यूज़ का आशय यह होना था, कि राज्य सरकार में कुछ खास ''इमरजेंसी'' सा डवलपमैंट, देर रात तक सभी वरिष्ठ अधिकारियों की अचानक लम्बी बैठक, और मुख्यमंत्री अपने पुत्र की शादी के कार्यक्रम को अफरातफरी में पूरा कर, स्टेट प्लेन से दिल्ली गये। अगले दिन राजस्थान में ''इमरजेंसी'' लागू कर दी गई थी। गुप्ता जी की खबर की हैडिंग में ''इमरजेंसी'' शब्द का उपयोग, बहुत सटीक रहा, और उन्हें बड़ी बधाईयां मिलीं, पत्रिका के विजय भण्डारी ने राष्ट्रदूत आकर, गुप्ता जी को बधाई दी।

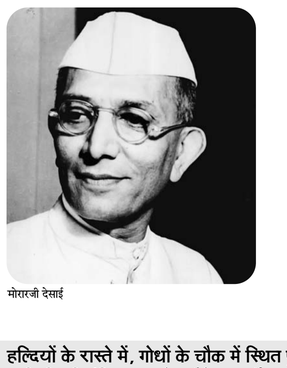

मोरारजी देसाई

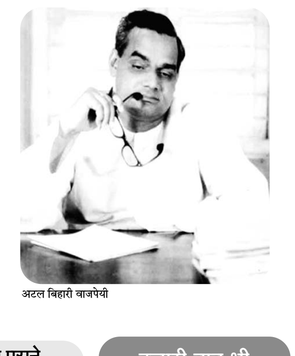

अटल बिहारी वाजपेयी

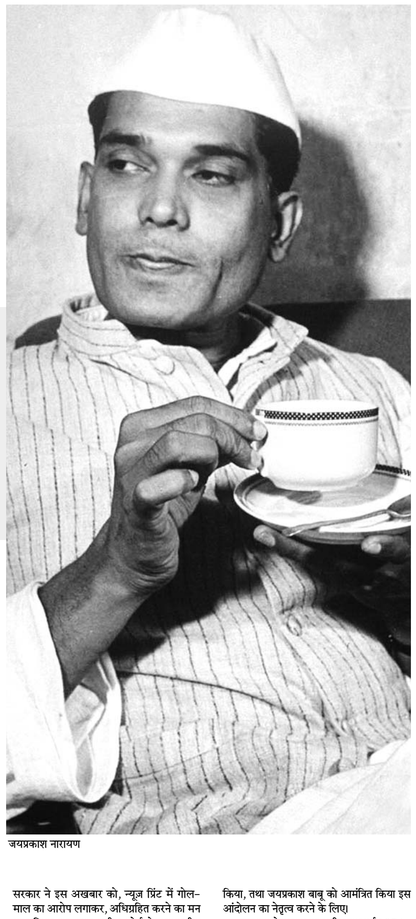

जयप्रकाश नारायण

राजेश शर्मा
प्रधान सम्पादक राष्ट्रदूत

26 जून से आज तक, लगभग सभी अखबारों ने "इमरजैंसी" के बारे में अपने अनुभव के बारे में खूब लिखा। कई अखबारों, जैसे इण्डियन एक्सप्रेस ने तो कई दिनों तक लगातार अपने अखबार के, अपने मालिक के, अपने संपादकों के, अपने रिपोर्टर्स के, यहां तक कि उस समय के उनके ड्राइवरों व अन्य प्रशासनिक कर्मचारियों तक के अनुभवों को अपने पाठकों से साझा किया।

यह जरूरी भी था, क्योंकि इन लोगों ने अपनी आँखों से "इतिहास" देखा था, भय महसूस किया था, और अपने प्रीफेशन को अनिश्चितता से ढकते देखा था। कुछ युवा खबरनवीसों को तो विश्वास नहीं हो रहा था, कि देश में ऐसा भी हो सकता है।

बहरहाल, सब कुछ दिल्ली में ही नहीं हुआ, काफी कुछ जयपुर में भी हुआ था। उस दिन, जो मैंने, राष्ट्रदूत में एक नौसिखिया, चौबीस वर्षीय प्रशिक्षु पत्रकार के रुप में, देखा व महसूस किया, आप लोगों से शेयर करना चाहता हूं, इससे पहले कि याददाश्त और धुंधली पड़ जाये और राष्ट्रदूत का वह अनुभव अनकहा, अनसुना रह जाये, तथा मन पर एक बोझ बना रहे कि समय रहते कुछ क्यों नहीं किया उन स्मृतियों को जीवित रखने के लिए, क्योंकि यह उन दिनों की बात है, जब अखबार, महाभारत के संजय की भांति, महाराज धृष्टराष्ट्र को केवल युद्ध का विवरण सुनाते थे, अपनी भावनाओं व भय को, अपने तक ही सीमित रखते थे। इसी तरह निष्पक्ष और तटस्थ रहना ही रिपोर्टर को सिखाया जाता था, पहले दिन से ही।

आज कल सम्पादकीय विभाग का वह माहौल गायब सा हो गया है, ऑन लाइन, "वर्क फ्रॉम होम" आदि, ईजाद किये गये काम करने के नये-नये तरीकों के कारण। अर्ली मॉर्निंग शिफ्ट, लेट नाइट शिफ्ट, रैग्युलर शिफ्ट के कारण सम्पादकीय विभाग का कोई न कोई व्यक्ति, लगभग हर समय होता ही था दफ्तर में। लगभग हर समय कोई छोटा या बड़ा प्रशिक्षु या कोई अनुभवी व्यक्ति दफ्तर से सम्पर्क कर लेता था, कुछ बताने के लिए, कुछ जानने के लिए, और शाम को तो पूरा "एडिटोरियल विभाग" मधुमक्खी के छत्ते की भांति, कामकाज की रोजमर्रा की ध्वनियों से जीवन्त रहता था। अत: यह तो कहना मुश्किल है कि यह कब एहसास हुआ कि अब कोई बड़ा राजनीतिक हादसा होने वाला है। पर, कुछ बड़ा पक रहा है, यह अहसास सबको होने लगा था, प्रेस के एडिटोरियल सैक्शन में।

हालांकि मेरी भूमिका इस शोश-खरोश के वातावरण में नगण्य सी ही थी। मैं प्रशिक्षु था, आई.आई.टी. व एक्स. एल.आर.आई. से पास होकर आया ही था, और अखबार में क्या करना है, तलाश ही रहा था। केवल ये निर्देश थे कि आँख-कान खुले रखो और "ऑब्जर्व" करो, क्योंकि "एडिटोरियल" पवित्र जगह है, यहाँ सबको अपना-अपना काम करने दो शांति से, किसी तरह का हस्तक्षेप अक्षम्य है, चाहे हस्तक्षेप की इच्छा रखने वाला मालिक का बेटा ही क्यों न हो। इस सन्दर्भ में एक किस्सा काफी प्रचलित था। टाइम्स ऑफ इण्डिया के संपादक गिरिलाल जैन, एडिटोरियल की मीटिंग ले रहे थे, अचानक समीर जैन हॉल में आये, गिरीलाल जैन ने भृकुटी तान कर समीर को इस तरह देखा, जैसे कह रहे हों, "आप क्या चाहते हैं, हमारे लाइट, पंखे व बाथरूम ठीक काम कर रहे हैं, आप यहां क्यों आये हैं।"

बहरहाल, "एडिटोरियल" की रौनक इतनी आकर्षक व "एक्साइटिंग" थी कि मैं बेवजह वहां चिपका ही रहता था। लोग (न्यूज मेकर) आते थे, जाते थे, दिन भर किस्से कहानियां शेयर की जाती थीं, टीका-टिप्पणियां सुनी-सुनाई जाती थीं, कटाक्ष भी एक दूसरे पर फेंके जाते थे।

हालांकि यह कहना सम्भव नहीं है कि एडिटोरियल डिपार्टमैंट के माहौल में अचानक इतनी तेजी कैसे आई। पर यह कहने में कुछ हिचकिचाहट नहीं कि देश का राजनीतिक तापमान गमनि में सबसे ज्यादा निर्णायक भूमिका चौहत्तर वर्षीय जयप्रकाश नारायण की थी।

स्वतंत्र भारत में जन्मी युवा पीढ़ी शायद उन्हें उतना करीब से नहीं जानती थी। पर जयप्रकाश जी की छवि उनके मन में परिवार के एक बुजुर्ग जैसी थी, जिसे पूर्णतया "ट्रस्ट" किया जा सकता है, और जो स्नेह से ओत-प्रोत, पर समझदारी पूर्ण, सुलझी हुई बात कहता है। 1973-74 में एक पारिवारिक शादी के लिए पूरे बैद्यानाथ परिवार का दिल्ली में जमावड़ा था। जमावड़े का केन्द्र था, रामेश्वर ठाकुर का आनन्द निकेतन बंगला। ठाकुर साहब बाद में सफल राजनीतिज्ञ बने और कांग्रेस पार्टी ने उनकी विश्वसनीयता की कद्र करते हुए, उन्हें केन्द्रीय मंत्री व गवर्नर आदि पद भी दिये। बंगले की "मेन बिल्डिंग" में घुसते ही एक बड़ा हॉलनुमा कमरा था, जिसके ग्लास पैनल वाले दरवाजों से एक वृद्ध दिखाई पड़ते थे, जो ज्यादातर अध्ययन रत से ही रहते थे। युवा पीढ़ी, शादी का शोर-शराबा और हंसी-मजाक के माहौल में भी, बिना कहे हॉल के आस-पास चहल कदमी पर अंकुश सा लगा रहता था। आते-जाते कभी आमना सामना हो जाये, तो उनकी स्नेह पूर्ण, पर कुछ थकी सी आँखे, कुछ मुस्कुरा सी देती थीं। यह कृष्ण काया, जयप्रकाश बाबू की थी, और मुझे तो बाद में कुछ आश्चर्य सा ही हुआ, जब इस "माइल्ड मैनर्ड" व्यक्ति ने, देश की "जोरदार" प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के खिलाफ सम्पूर्ण क्रान्ति का नारा दिया, और कुछ साल पहले ही पाकिस्तान के दो टुकड़े करने वाली महिला के घुटने टिकवा दिये। जयप्रकाश बाबू की मूल व सबसे मजबूत समर्थक युवा पीढ़ी थी, जो उनमें पितामह की छवि देखती थी।

> हजारी बाबू बोले, ''चलो गुप्ताजी, हम यहां क्या भाषण सुनने आये हैं।'' हजारी बाबू के उठते ही ''महफिल'' उठ सी गई। जोशी जी हजारी बाबू के पीछे पीछे आये, ''अरे ठहरिये हजारी बाबू, सब कुछ दे दिया जायेगा आपको।'' हजारी बाबू घर आकर ही रुके। शहर में चर्चा फैली, कि हजारी बाबू गिरफ्तार हो गये हैं या हो जायेंगे। मैंने गुप्ताजी से पूछा, उन्होंने बड़े विश्वास से कहा, ''जोशी जी ऐसा नहीं कर पायेंगे। बाबूजी का भारी योगदान रहा है कांग्रेस को जमाने में, जो सब जानते हैं।''

25 जून की शाम "एडिटोरियल" विभाग में अजीब सी चुप्पी थी। जय प्रकाश बाबू ने दिल्ली के रामलीला मैदान से आम सभा को सम्बोधित करते हुए, सरकारी अफसरों व अन्य मुलाजिमों का खुला आव्हान किया था, कि अगर सरकार जनता विरोधी आदेश देती है, क्रियान्वन के लिए, तो उन्हें इन आदेशों की अवहेलना करने का पूरा नैतिक अधिकार है।

जयप्रकाश बाबू का यह खुला आव्हान एक तरह से सरकारी कर्मचारी को खुली बगावत करने का आमंत्रण दे रहा था। इस आमंत्रण का क्या हश्र होगा, पूरा "सम्पादकीय विभाग" श्वास रोक कर आशंका से इन्तजार कर रहा था। तभी राष्ट्रदूत के चीफ रिपोर्टर और हजारी बाबू के अत्यन्त विश्वास पात्र मोहन लाल गुप्ता ने याद दिलाया, कि बी.एन. जोशी के घर पर विवाहोत्सव है। जोशी जी पुराने कांग्रेसी नेता थे। तब पी.सी.सी. में एक ही महासचिव होता था। मूलत: बांदीकुई के रहने वाले बी.एन. जोशी वर्षों से पार्टी के एक मात्र महासचिव थे। राज्य व केन्द्र में कांग्रेस की ही सरकार थी, अत:, रूलिंग पार्टी के प्रदेश महासचिव का अलग ही महत्व था। कांग्रेस उस जमाने में भी दो सशक्त खेमों में बंटी हुई थी। प्रथम मुख्यमंत्री जयनारायण व्यास के समर्थक अनुयायियों का ग्रुप, जो प्राय: जोधपुर ग्रुप के नाम से जाना जाता था।

दूसरा खेमा सुखाड़िया खेमा कहलाता था, जिसे उदयपुर खेमा या सत्तापक्ष भी कहते थे। दोनों में (हैल्दी) प्रतिस्पर्धा भी खूलकर चल रही थी। उदाहरण के लिए, एक बार उदयपुर खेमे के सैकण्ड-इन-कमांड देवपुरा जी से मैंने पूछा कि ऐसा कैसे हुआ कि वे 1952 से लगातार विधायक रहे, केवल 1962 को छोड़ कर। उन्होंने हंसकर मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "आपके पिताजी ने मेरा टिकट प्रदेशाध्यक्ष जयनारायण जी से कटवा दिया था, क्योंकि 1957 में हमने उनको विधानसभा चुनाव में, जब सुखाड़िया जी मुख्यमंत्री थे, कोटपुतली से हरवा दिया था, क्योंकि वे व्यास जी के सैकण्ड-इन-कमांड थे।"

इस तरह से उस समय दो खेमों में विभक्त कांग्रेस का एक मात्र निर्वाचित महासचिव होना बड़े महत्व की बात थी। मूलत: बी.एन. जोशी जयनारायण व्यास ग्रुप के थे, पर सुखाड़िया ग्रुप लगातार सत्ता में था, पहले स्वयं सुखाड़िया, फिर हरदेव जोशी और फिर देवपुरा पर, किसी भी ग्रुप को बी.एन. जोशी ने अपनी विश्वसनीयता व निष्ठा पर अंगुली उठाने का मौका कभी नहीं दिया।

स्वाभाविक ही था, उनके परिवार के विवाहोत्सव में सभी राजनीतिज्ञ तो मौजूद थे ही, मुख्य सचिव सहित सचिवालय के सभी बड़े अफसर शामिल थे। हजारी बाबू ने गुप्ता जी के कान में कहा, "मालूम करो क्या बात है। एक-एक करके वरिष्ठ सरकारी अधिकारी मुख्यमंत्री सचिव के पास जा रहे हैं, दो सैकण्ड बात होती है, और वह अधिकारी चुपचाप खिसक लेता है।"

विवाहोत्सव, जो एम.आई.रोड पर राष्ट्रदूत ऑफिस से लगभग सामने एम.एल.ए. क्वाटर्स के बंगले में था, से लौट कर गुप्ताजी अफसरों को फोन करने में लग गये, और फिर हजारी बाबू से बोले, पता नहीं क्यों, पर कोई भी वरिष्ठ अधिकारी घर पर नहीं मिला। सबके यहां से एक ही जवाब मिल रहा है, "सचिवालय गये हैं, कोई मीटिंग है।"

यह सब जानकारी इकट्ठी करते-करते लगभग ग्यारह बज गये थे। हजारी बाबू ने कहा, "मुख्यमंत्री जोशी को फोन करके पूछो। बांसवाड़ा फोन करके मुख्यमंत्री के स्टाफ से बात हुई, जवाब मिला अभी जोशी बेटे की शादी के फेरों में बैठे हैं, उठते ही बात करा देंगे। गुप्ताजी ने आधे घण्टे बाद फिर फोन किया, उसी स्टाफ के आदमी ने कहा, "गुप्ता जी माफ करना बात नहीं करा सका। फेरे से उठते ही मुख्यमंत्री स्टेट प्लेन से दिल्ली रवाना हो गये थे।"

इस घटनाक्रम का पूरा मंथन हुआ और गुप्ताजी को पहले पेज के लिए "न्यूज" बनाने का जिम्मा सौंपा गया। न्यूज का आशय यह होना था, कि राज्य सरकार में कुछ खास "इमरजैंसी" सा डवलपमैंट, देर रात तक सभी वरिष्ठ अधिकारियों की अचानक लम्बी बैठक, और मुख्यमंत्री अपने पुत्र की शादी के कार्यक्रम को अफरातफरी में पूरा कर, स्टेट प्लेन से दिल्ली गये। अगले दिन राजस्थान में "इमरजैंसी" लागू कर दी गई थी। गुप्ता जी की खबर की हैडिंग में "इमरजैंसी" शब्द का उपयोग, बहुत सटीक रहा, और उन्हें बड़ी बधाईयां मिलीं, पत्रिका के विजय भण्डारी ने राष्ट्रदूत आकर, गुप्ता जी को बधाई दी।

अभी सब परिवार वाले, सुबह-सुबह इस सफलता का रसास्वादन कर ही रहे थे, एक काली अम्बेसडर गाड़ी आकर रुकी और उसके पीछे पुलिस का एक ट्रक था, जिसमें से पुलिस वाले बिना इजाजत राष्ट्रदूत के कार्यालय घुस रहे थे, जहां अंदर के पेजों की तैयारी में, "कम्पोजीटर" सम्पादकीय विभाग से कांपी लेकर कम्पोजिंग शुरू कर रहे थे। पुलिस वालों ने उन कम्पोजीटरों के हाथ से, कांपियाँ, छीनना शुरू कर दिया।

> स्वतंत्र भारत में जन्मी युवा पीढ़ी शायद उन्हें उतना करीब से नहीं जानती थी। पर जयप्रकाश जी की छवि उनके मन में परिवार के एक बुजुर्ग जैसी थी, जिसे पूर्णतया ''ट्रस्ट'' किया जा सकता है, और जो स्नेह से ओत-प्रोत, पर समझदारी पूर्ण, सुलझी हुई बात कहता है। इस ''माइल्ड मैनर्ड'' व्यक्ति ने, देश की ''जोरदार'' प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के खिलाफ सम्पूर्ण क्रान्ति का नारा दिया, और कुछ साल पहले ही पाकिस्तान के दो टुकड़े करने वाली महिला के घुटने टिकवा दिये।

हजारी बाबू अपनी चप्पल सम्भालते हुए, वहां पहुंचे, तथा उस अधिकारी से तमतमाते हुए पूछा, "ये क्या हो रहा है?" बड़ी विनम्रता से वह अधिकारी बोला, "हजारी बाबू विचलित न हों। सरकारी आदेश है, मैं अभी आपको सब कुछ बताता हूं।" उस अधिकारी ने अपना वाक्य पूरा भी नहीं किया था, कि किसी मुलाजिम ने बिजली के खम्भों पर चढ़कर, "फ्यूज" निकाल दिये, तथा दफ्तर, प्रेस व घर पर से बिजली चली गई, एक अंधेरा सा छा गया, एक चुप्पी सी छा गयी।

सभी स्तब्ध रह गये। मुझे तो लगा जैसे दिल की धड़कन ही बंद हो गई, क्योंकि अखबार के दफ्तर में एडियोरियल में, प्रेस में सदा एक चहल कदमी रहती थी, लगभग चौबीस घण्टे। गत 26 जनवरी को ही राष्ट्रदूत अपने पुराने ठिकाने से उठकर, एम.आई. रोड स्थित नये पते पर आया था तथा छब्बीस जनवरी का अंक नये प्रेस में नई रोटरी मशीन पर छपा था। पर, पुराने प्रेस में अभी पुरानी व्यवस्था, कम्प्याजीटर्स के टाइप, पेज बनाने के लिए फर्मे व पुरानी मशीनें यथावत् खड़ी थीं। हील्यों के रास्ते में, गोधों के चौक में स्थित पुराने प्रेस की तीसरी मंजिल पर, प्रेस मैनेजर धर्मेन्द्र शुक्ला व उनका परिवार रहता था। दम घुटता, इससे पहले भागकर शुक्लाजी को फोन लगाया गया और निर्देशित किया गया, कि, कम्पोज़ीटरों को इकट्ठा करके पुरानी प्रेस बुला लो, तथा एडिटोरियल स्टाफ को भी वहां ही भेज रहे हैं, जिससे पुराने प्रेस से अखबार निकाला जा सके। फोन सुनकर शुक्लाजी इन्तजामात में जुट ही रहे थे, कि, वहां भी सरकारी जत्था पहुंच गया, और खंभे से बिजली काट दी। हम लोग भूल गये थे, कि, जो सरकार बिजली काट सकती है, वह फोन तो पहले "टैप" करेगी।

ऐसी तड़पन थी, माहौल में। क्योंकि शायद किसी को स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं थी की कि राष्ट्रदूत के साथ भी ऐसा हो सकता है। जो भी मिलने आ रहा था, ऐसा लग रहा था, किसी गमी में शरीक होने आ रहा है। हजारी बाबू भी गम्भीर थे, पर मेरी ही नहीं, हर व्यक्ति की हर आशंका का, बेचैनी से जवाब दे रहे थे। "क्या अखबारों का भविष्य खत्म है?", "क्या कभी चुनाव होंगे?" वे विश्वास पूर्वक दृढ़ता से कह रहे थे, "आप घड़ी को उल्टा नहीं सकते (यू कान्ट टर्न -द क्लॉक बैक)। अब प्रजातंत्र खत्म नहीं किया जा सकता हिन्दुस्तान में। "सस्पैंड" जरूर किया जा सकता है कुछ समय के लिए।"

> हल्दियों के रास्ते में, गोधों के चौक में स्थित पुराने प्रेस की तीसरी मंजिल पर, प्रेस मैनेजर धर्मेन्द्र शुक्ला व उनका परिवार रहता था। दम घुटता, इससे पहले भागकर शुक्लाजी को फोन लगाया गया और निर्देशित किया गया, कि, कम्पोज़ीटरों को इकट्ठा करके पुरानी प्रेस बुला लो, तथा एडिटोरियल स्टाफ को भी वहां ही भेज रहे हैं, जिससे पुराने प्रेस से अखबार निकाला जा सके। फोन सुनकर शुक्लाजी इन्तजामात में जुट ही रहे थे, कि, वहां भी सरकारी जत्था पहुंच गया, और खंभे से बिजली काट दी। हम लोग भूल गये थे, कि, जो सरकार बिजली काट सकती है, वह फोन तो पहले ''टैप'' करेगी।

दोपहर में गुप्ताजी खबर लाये कि मुख्यमंत्री ने अपने निवास, आठ "सिविल लाइंस" पर, अखबारों के मालिकों और वरिष्ठ पत्रकारों को बुलाया है। हजारी बाबू, गुप्ताजी के स्कूटर पर पीछे बैठ कर वहां पहुंचे। काफी लोग पहले ही पहुंच चुके थे। हरदेव जी, उस दिन का घटना क्रम समझा रहे थे, कि किसे देश में अराजकता का वातावरण बन गया है, तथा कानून-व्यवस्था बनाये रखने के लिए केन्द्रीय सरकार ने "इमरजैंसी" घोषित कर दी है, तथा अखबारों पर "सैंसर शिप" लगाई होगी। हजारी बाबू भरे हुए तो थे ही, "क्या यह बताने के लिए हम लोगों को बुलाया है। मैंने ब्रिटिश राज की "सैंसर शिप" भी देखी है। क्या छपेगा, क्या नहीं छपेगा, कोई गाइड लाइन जारी की है, आपने। प्री-सेंसर शिप की क्या प्रक्रिया होगी? जवाब मिला, "गाइड लाइन तैयार हो रही है, ...।" हजारी बाबू बोले, "चलो गुप्ताजी, हम यहां क्या भाषण सुनने आये हैं।" हजारी बाबू के उठते ही "महफिल" उठ सी गई। जोशी जी हजारी बाबू के पीछे पीछे आये, "अरे ठहरिये हजारी बाबू, सब कुछ दे दिया जायेगा आपको।" हजारी बाबू घर आकर ही रुके। शहर में चर्चा फैली, कि हजारी बाबू गिरफ्तार हो गये हैं या हो जायेंगे। मैंने गुप्ताजी से पूछा, उन्होंने बड़े विश्वास से कहा, "जोशी जी ऐसा नहीं कर पायेंगे। बाबूजी का भारी योगदान रहा है कांग्रेस को जमाने में, जो सब जानते हैं।"

बहरहाल गिरफ्तारी तो नहीं हुई, पर उस दिन से अखबारों की "सैंसरशिप" शुरू हो गई। सैंसर शिप करने वाला सरकारी कर्मचारियों का स्टाफ डी.पी.आर. के दफ्तर में बैठने लगा, तथा अखबार वाले शाम से अपने अखबारों के प्रूफ लेकर वहां जाने लगे, कुछ आपत्तिजनक न पाने पर, सैंसर शिप करने वाला स्टाफ उस पर हस्ताक्षर करके, मोहर लगाकर वापस दे देता था। मैसेज था, आपके अखबार ने सैंसर की सीढ़ी पार कर ली है, तथा अब आप छपाई कर सकते हैं। इस सैंसरशिप के शीर्ष अधिकारी थे, साफ सुलझे गृह सचिव एल.एन. गुप्ता, उनकी सूझ-बूझ से ही सैंसर शिप का नाजुक दौर निकल गया। एक बार तो राष्ट्रदूत में छपने आया आधा पेज का विज्ञापन, "लास्ट मिनट" में इसलिए रोक दिया गया, क्योंकि विज्ञापन "मोरारजी मिल्स" का था। अफरा-तफरी मच गई, क्योंकि, छपाई से ठीक पहले, आधा पेज की खबरें, कम्पोज कराकर कहां से लायें। हल्ला सुनकर, एल.एन. गुप्ता साहब आये और मौके की नाजुकता समझी, कि उनके स्टॉफ की सार्वजनिक रूप से "हेटी" भी न हो, और अखबार वाले के लिए अनावश्यक दिक्कतें भी न बढ़ें। बड़े अफसराना तरीके से, गम्भीर आवाज में निर्णय सुनाया अपने स्टॉफ को, "इस बार चेतावनी देकर छोड़ दो, अगली बार पूरी सख्ती करना।"

आपातकाल के "फायदे" भी जरुर होंगे, आखिर तभी राजस्थान पत्रिका के बहु आदरणीय सम्पादक कपूर चन्द जी कुलिश ने उस दौरान पूरे प्रदेश का दौरा किया, और आपातकाल की अच्छाइयों, जो उन्होंने देखीं और महसूस कीं, का वर्णन अपनी किताब "मैं देखता चला गया" में किया। यह गिनाया गया कि आपातकाल में सरकारी कर्मचारी समय से दफ्तर आने लगे थे, रिश्वत लेने से घबराने लगे थे। ऐसा अहसास कराया गया कि अब स्वर्णिम युग की शुरूआत होगी। बेकाबू दौड़ते हुए घोड़े के वेग से बढ़ती आबादी पर रोक लगेगी (नसबन्दी), सरकारी व सार्वजनिक भूमि पर अतिक्रमण रूकेगा ही नहीं बल्कि, पुराने अतिक्रमण व अवैध निर्माण भी तोड़े जायेंगे (दिल्ली का बहुचर्चित तुर्कमान गेट प्रकरण)। उन दिनों में मैं पारिवारिक प्रतिष्ठान श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन में प्रेसीडैंट भी था, तथा कई बार इलाहाबाद बोर्ड मीटिंग के लिए भी जाया करता था। इलाहाबाद में यू.पी. का ए.जी. ऑफिस है। उसकी बिल्डिंग व प्रांगण, राजस्थान के सचिवालय से दुगना है साइज में। जब इमरजैंसी लागू हुई व रोज हाजरी ली जाने लगी सीट पर, तो यह उजागर हुआ कि जितने कर्मचारी व अफसर "रोल" पर हैं, अगर अपनी सीटों पर बैठना चाहें, तो यह सम्भव नहीं है, बीस प्रतिशत कुर्सियां कम हैं।

> हजारी बाबू भी गम्भीर थे, पर मेरी ही नहीं, हर व्यक्ति की हर आशंका का, बेचैनी से जवाब दे रहे थे। ''क्या अखबारों का भविष्य खत्म है?'', ''क्या कभी चुनाव होंगे?'' वे विश्वास पूर्वक दृढ़ता से कह रहे थे, ''आप घड़ी को उल्टा नहीं सकते (यू कान्ट टर्न -द क्लॉक बैक) । अब प्रजातंत्र खत्म नहीं किया जा सकता हिन्दुस्तान में। ''सस्पैंड'' जरूर किया जा सकता है कुछ समय के लिए।''

बहरहाल गिरप्तारी की चर्चा फैली थी, पर उस दिन से अखबारों की "सैंसरशिप" शुरू हो गई। सैंसर शिप करने वाला सरकारी कर्मचारियों का स्टाफ डी.पी.आर. के दफ्तर में बैठने लगा, तथा अखबार वाले शाम से अपने अखबारों के प्रूफ लेकर वहां जाने लगे, कुछ आपत्तिजनक न पाने पर, सैंसर शिप करने वाला स्टाफ उस पर हस्ताक्षर करके, मोहर लगाकर वापस दे देता था। मैसेज था, आपके अखबार ने सैंसर की सीढ़ी पार कर ली है, तथा अब आप छपाई कर सकते हैं। इस सैंसरशिप के शीर्ष अधिकारी थे, साफ सुलझे गृह सचिव एल.एन. गुप्ता, उनकी सूझ-बूझ से ही सैंसर शिप का नाजुक दौर निकल गया। एक बार तो राष्ट्रदूत में छपने आया आधा पेज का विज्ञापन, "लास्ट मिनट" में इसलिए रोक दिया गया, क्योंकि विज्ञापन "मोरारजी मिल्स" का था। अफरा-तफरी मच गई, क्योंकि, छपाई से ठीक पहले, आधा पेज की खबरें, कम्पोज कराकर कहां से लायें। हल्ला सुनकर, एल.एन. गुप्ता साहब आये और मौके की नाजुकता समझी, कि उनके स्टॉफ की सार्वजनिक रूप से "हेटी" भी न हो, और अखबार वाले के लिए अनावश्यक दिक्कतें भी न बढ़ें। बड़े अफसराना तरीके से, गम्भीर आवाज में निर्णय सुनाया अपने स्टॉफ को, "इस बार चेतावनी देकर छोड़ दो, अगली बार पूरी सख्ती करना।"

आपातकाल के "फायदे" भी जरुर होंगे, आखिर तभी राजस्थान पत्रिका के बहु आदरणीय सम्पादक कपूर चन्द जी कुलिश ने उस दौरान पूरे प्रदेश का दौरा किया, और आपातकाल की अच्छाइयों, जो उन्होंने देखीं और महसूस कीं, का वर्णन अपनी किताब "मैं देखता चला गया" में किया। यह गिनाया गया कि आपातकाल में सरकारी कर्मचारी समय से दफ्तर आने लगे थे, रिश्वत लेने से घबराने लगे थे। ऐसा अहसास कराया गया कि अब स्वर्णिम युग की शुरूआत होगी। बेकाबू दौड़ते हुए घोड़े के वेग से बढ़ती आबादी पर रोक लगेगी (नसबन्दी), सरकारी व सार्वजनिक भूमि पर अतिक्रमण रूकेगा ही नहीं बल्कि, पुराने अतिक्रमण व अवैध निर्माण भी तोड़े जायेंगे (दिल्ली का बहुचर्चित तुर्कमान गेट प्रकरण)। उन दिनों में मैं पारिवारिक प्रतिष्ठान श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन में प्रेसीडैंट भी था, तथा कई बार इलाहाबाद बोर्ड मीटिंग के लिए भी जाया करता था। इलाहाबाद में यू.पी. का ए.जी. ऑफिस है। उसकी बिल्डिंग व प्रांगण, राजस्थान के सचिवालय से दुगना है साइज में। जब इमरजैंसी लागू हुई व रोज हाजरी ली जाने लगी सीट पर, तो यह उजागर हुआ कि जितने कर्मचारी व अफसर "रोल" पर हैं, अगर अपनी सीटों पर बैठना चाहें, तो यह सम्भव नहीं है, बीस प्रतिशत कुर्सियां कम हैं।

बहरहाल, मेरी पत्नी के पितामह पं. मौलीचन्द शर्मा, जनसंघ के प्रथम महासचिव थे तथा श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मृत्यु के बाद अध्यक्ष बने। जन संघ, आर.एस.एस. नेटवर्क पर कुलिश जी शायद उनसे परिचित थे, क्योंकि, वे मौलीचन्द जी के घर जाकर अपनी पुस्तक उनको भेंट करके आये थे, जैसा मौलीचन्द जी ने जिक्र किया था। मौलीचन्द जी हालांकि, पं. नेहरू जी से नजदीकी के कारण या उनसे प्रभावित होकर कांग्रेस के भी नजदीक चले गये थे। टाइम्स ऑफ इंडिया से कुपित होकर कांग्रेस सरकार ने इस अखबार को, न्यूज प्रिंट में गोल-माल का आरोप लगाकर, अधिग्रहित करने का मन बना लिया था, तथा सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस शाह को बैनट कोलमैन एण्ड कम्पनी (टाइम्स ऑफ इंडिया) अखबार के प्रकाशक व मालिक के बोर्ड का अध्यक्ष मनोनीत किया तथा काम काज देखने के लिए मौलीचन्द जी को "एफिक्फ्यूटिव डॉयरेक्टर" के साथ ही नवगठित लैंगयेज कमीशन का चार्ज भी सौंपा, पर जैसा कि उस समय का चलन था, और परिपाटी थी, मौलीचन्द जी के जनसंघ/आर.एस.एस. के साथ सम्बन्धों में कोई खटास नहीं आई। तथा जनसंघ के दिग्गज, जैसे बसंत राव ओक आदि, प्राय: उनके पास बैठे हुए मिल जाते, जब भी मैं वहां गया।

इमरजैंसी के बाद, जब जनता पार्टी चुनाव जीती, तथा नई सरकार ने राजघाट पर शपथ लेने का मन बनाया, जनता पार्टी के तीनों घटकों को (कांग्रेस (ओ.)), सोशलिस्ट व जनसंघ के वरिष्ठ नेताओं को शपथ ग्रहण समारोह को "लीड" करने के लिए आमंत्रित किया गया। कांग्रेस (ओ.) का प्रतिनिधित्व कृपलानी जी ने किया, सोशलिस्टों की ओर से जयप्रकाश बाबू, तथा, जनसंघ की ओर से मौलीचन्द जी से आग्रह किया गया था। पर, "किन्हीं" कारणों से वे हिचकिचा गये थे। और कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई। कहा जाता है, कुलिश जी ने "मैं देखता चला गया" का नया रिवाइज्ड संस्करण भी छापा था, पर, मैं नहीं देख पाया, क्योंकि तब तक मौलीचन्द जी की मृत्यु हो चुकी थी, तथा उन्हें प्रतिलिपी शायद भेंट नहीं मिल पाई थी।

आपातकाल के बारे में एक बहुत बड़ा दु:ख इस बात का है कि कैसे और किस तरह से जनता व नेताओं का सोच बदला इमरजैंसी के बारे में।

14 अगस्त 1977 को बेलची से लौटते समय, इंदिरा गांधी पटना के कदम कुआं में दो मंजिले मकान पर पहुंचीं, जिसमें वर्षों से जयप्रकाश बाबू की पत्नी प्रभादेवी महिला चर्खा समिति चलाती थीं, अप्रेल 1973 में अपनी मृत्यु तक। जयप्रकाश उस मकान के दूसरे भाग में रहते थे। वे डायलिसिस पर थे। इमरजैंसी में उन्होंने एक सौ तीन दिन एकांकी कारावास में गुजारे थे। चण्डीगढ़ में उसी दौरान कारावास में उनकी किडनी क्षतिग्रस्त हो गई थी। जे.पी. के भाई रामेश्वर प्रसाद, ने इंदिरा गांधी को पत्र लिखा, जे.पी. दो माह से ज्यादा जीवित नहीं रहेंगे। अत: क्या जे.पी. का जेल में मरना, आपके हित में होगा। दो दिन बाद जे.पी. जेल से रिहा कर दिये गये थे।

जे.पी. का इंदिरा गांधी से रिश्ता काफी "कॉम्प्लैक्स" था। इसी रिश्ते को पोषित करने, उस दिन इंदिरा गांधी जयप्रकाश बाबू से मिलने उनके घर गई थीं। वर्ष 1973-74 में जयप्रकाश बाबू ने "पूर्ण क्रांति" का आव्हान देकर, गुजरात में विद्यालयों का नव निर्माण आंदोलन शुरू किया था और यह आंदोलन कांग्रेस के चिमन भाई पटेल की सरकार को गिराल गया था। फिर, गुजरात की भांति बिहार में भी युवा पीढ़ी ने सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, बढ़ती महांगाई व चुनाव प्रक्रिया में आमूल परिवर्तन के लिए आंदोलन शुरू किया, तथा जयप्रकाश बाबू को आमंत्रित किया इस आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए।

इस आन्दोलन का यह राष्ट्रीय गान वर्ष